कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम
NCDC
Assisting Cooperatives. Always!
सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

2025
International Year of Cooperatives

Ministry of Cooperation | सहकारिता मंत्रालय
Government of India | भारत सरकार

NATURAL FARMING
प्राकृतिक खेती

आरंभशील किसान उत्पादक संगठन सहकारी समिति लि. हापुड़

खसरा नं.–832, ग्राम भदस्याना, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ –245208 (उ0 प्र 0)

नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग योजना के क्लस्टर हेतु जैविक इनपुट रिसोर्स सेन्टर (BRC)

तकनीकी सहयोग :– कृषि विभाग, हापुड़
कृषि विज्ञान केन्द्र, हापुड़
सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0 प्र0)

आरंभशील किसान उत्पादक संगठन सहकारी समिति लि.

उ0 प्र0 सहकारी समिति लि0

पंजी0 सं0 :–138

ग्राम-भदस्याना, गढमुक्तेश्वर, हापुड (उ0 प्र0)

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ–250110

"प्राकृतिक खेती, स्वस्थ जीवन का आधार"

प्राकृतिक खेती पद्धति, खेती लागत को कम कर तथा भूमि की उर्वरा शक्ति को बरकरार रखकर अधिक उत्पादन देने वाली विधि हैं। प्राकृतिक खेती भूमि की उर्वरता एवं जैविक मात्रा में वृद्धि कर फसलों एवं फल सब्जियों में कीट–पतंगों एवं बीमारियों की रोकथाम करके किसानों की आर्थिकी में बदलाव लाने की क्षमता रखती हैं।कृषि क्षेत्र में देश और प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्राकृतिक खेती सबसे बेहतर विकल्प हैं। इस खेती पद्धती को अपनाने से किसानों के उत्पादन की लागत कम होकर आय कई गुणा बढ़ेगी। इसका मूल मंत्र है **"जीवन के साथ, प्रकृति के साथ"।**

प्राकृतिक खेती के लाभ–

1. **स्वस्थ भोजन** – इससे उत्पन्न अनाज, फल और सब्जियाँ जहरीले रसायनों से मुक्त होते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं।
2. **मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती है** – रासायनिक खेती के मुकाबले प्राकृतिक खेती मिट्टी को ज्यादा उपजाऊ और जीवित बनाए रखती है।
3. **जल संरक्षण में सहायक** – यह खेती पद्धति कम पानी की मांग करती है, जिससे जल संकट को भी रोका जा सकता है।
4. **कृषि लागत में कमी** – रासायनिक खादों व कीटनाशकों की जगह स्थानीय संसाधनों के उपयोग से खर्च कम होता है, जिससे किसानों को अधिक लाभ होता है।
5. **पर्यावरण संरक्षण** – यह खेती न केवल धरती की उर्वरता बढ़ाती है, बल्कि जल, वायु और जैवविविधता की भी रक्षा करती है।

गाय का विशेष योगदान–

हमारे देशी गौवंश प्राकृतिक खेती की रीढ़ हैं। गाय के गोबर और गौमूत्र से बनी जीवामृत, घनजीवामृत और बीजामृत जैसे समाधान मिट्टी को उर्वर बनाने और पौधों को रोगमुक्त रखने में सहायक होते हैं।

प्राकृतिक खेती का आधार है–

- मिट्टी को जहरमुक्त रखना
- बीजों को देशी और सुरक्षित बनाना
- जल का संरक्षण करना
- जीव–जंतुओं, पशु–पक्षियों और मानव का सह–अस्तित्व सुनिश्चित करना।

एक समय हमने रासायनिक खेती के माध्यम से हरित क्रांति कर अपनी खाद्यान्न जरूरतों को पूरा किया पर अब इसके कारण होने वाले दूरगामी दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए हमें प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ना ही होगा।

प्राकृतिक खेती से सेहत भी और समृद्धि भी है। प्राकृतिक खेती वैकल्पिक कृषि पद्धति नहीं, बल्कि यह भारत के कृषक समुदाय की समृद्धि, समाज के स्वास्थ्य, पर्यावरण की रक्षा और टिकाऊ विकास की नींव है।

आइए, हम सब मिलकर प्राकृतिक खेती की ओर लौटें।
हमारी धरती, हमारा स्वास्थ्य, और हमारे बच्चों का भविष्य – यही इसकी पुकार है।
जय जवान, जय किसान, जय प्रकृति!

डा० पी०के०सिंह
निदेशक प्रसार

1. जीवामृत (Jeevamrit)

➤ **उद्देश्य:** यह एक तरल जैविक खाद है जो मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं को सक्रिय करता है और फसल की वृद्धि तेजी से करता है।

➤ सामग्री (1 एकड़ के लिए / 200 लीटर):

- देशी गाय का ताजा गोबर - 10 किग्रा
- देशी गाय का मूत्र - 10 लीटर
- बेसन (चना/अरहर का आटा) - 2 किग्रा
- गुड़ - 2 किग्रा
- मिट्टी (5 फीट गहराई वाली खेत की) - 1 मुठ्ठी
- पानी - 200 लीटर

➤ बनाने की विधि:

1. सभी चीजों को एक प्लास्टिक ड्रम में डालें।
2. लकड़ी की छड़ी से सुबह-शाम 10 मिनट चलाएं।
3. ढक्कन ढीला रखें ताकि हवा अंदर जाए।
4. 48 घंटे (2 दिन) बाद यह जीवामृत उपयोग योग्य हो जाता है।

➤ उपयोग:

- 15 दिन में 1 बार, 200 लीटर जीवामृत ड्रिप/स्प्रे/सिंचाई से दें।
- मिट्टी में सूक्ष्मजीव बढ़ाकर उत्पादकता बढ़ाता है।

➤ फायदे:

- लागत में कमी, उत्पादन में वृद्धि
- मिट्टी की उर्वरता बहाल होती है
- रासायनिक खाद की जगह लेता है

2. घनजीवामृत (Ghanjeevamrit)

➤ उद्देश्य:

जब पानी की उपलब्धता ना हो तब यह एक ठोस जैविक खाद के रूप में प्रयोग में आता है।

➤ सामग्री (20 किग्रा घनजीवामृत के लिए):

- देशी गाय का गोबर - 10 किग्रा
- देशी गाय का मूत्र - 2 लीटर
- गुड़ - 500 ग्राम
- बेसन - 500 ग्राम
- खेत की मिट्टी - 1 मुठ्ठी

➤ बनाने की विधि:

1. सब चीजों को मिलाकर अच्छी तरह गूंथें।
2. इसे गोला बनाकर छांव में सुखा लें।
3. सूखने पर यह **घनजीवामृत** तैयार है।

➤ उपयोग:

- बीज या पौधे के जड़ों के आसपास 200-500 ग्राम मात्रा डालें या 10 केजी प्रति एकड़।
- 30 दिन के अंतराल पर प्रयोग करें।

➤ फायदे:

- यह फसल की जड़ों को मजबूती देता है
- मिट्टी को सूक्ष्मजीवों से भरपूर करता है

3. बीजामृत (Beejamrit)

➤ उद्देश्य:

बीजों का उपचार करके उन्हें रोग-प्रतिरोधक और अंकुरण के लिए तैयार करता है।

➤ सामग्री (10 किग्रा बीज के लिए):

- देशी गाय का मूत्र - 5 लीटर
- देशी गाय का गोबर - 250 ग्राम
- चूना - 5 ग्राम (या नींबू का रस 5 ml)
- मिट्टी - 1 मुठ्ठी

➤ बनाने की विधि:

1. सब कुछ मिलाकर घोल बनाएं।
2. बीज को इस घोल में 30 मिनट तक डुबोएं।
3. छांव में सुखाएं और तुरंत बोएं।

➤ फायदे:

- बीजजन्य रोग समाप्त
- अंकुरण तेज और स्वस्थ पौध

4. ब्रह्मास्त्र (Brahmastra)

➤ उद्देश्य:

यह कीट नियंत्रण के लिए शक्तिशाली प्राकृतिक कीटनाशक है।

➤ सामग्री:

- देशी गाय का मूत्र - 10 लीटर
- नीम के पत्ते - 2 किग्रा
- धतूरा - 2 किग्रा
- आक - 2 किग्रा
- तुलसी, करंज, गिलोय आदि - 2-2 किग्रा

➤ बनाने की विधि:

1. सभी पत्तों को कूटकर मूत्र में डालें।
2. धीमी आंच पर 4-5 घंटे पकाएं।
3. 24 घंटे ठंडा होने दें, छान लें।

➤ उपयोग:

- 200 ml ब्रह्मास्त्र + 15 लीटर पानी मिलाकर स्प्रे करें।
- सप्ताह में 1 बार छिड़काव करें।

➤ फायदे:

- थ्रिप्स, माहू, फल छेदक आदि कीट समाप्त
- पौधे पर कोई जलन नहीं

5. अग्निअस्त्र (Agniastra)

➤ उद्देश्य:

रसचूसक कीटों के लिए विशेष असरदार कीटनाशक

➤ सामग्री:

- देशी गाय का मूत्र - 10 लीटर
- लहसुन - 500 ग्राम
- हरी मिर्च - 500 ग्राम
- अदरक - 500 ग्राम
- तंबाकू पत्ती - 500 ग्राम

➤ बनाने की विधि:

1. सभी चीजों को कूटकर मूत्र में डालें।
2. धीमी आंच पर 4-5 घंटे पकाएं।
3. छानकर ठंडा करें, स्टोर करें।

➤ उपयोग:

- 150–200 ml/15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

➤ फायदे:

- सफेद मक्खी, माहू, थ्रिप्स आदि पर असरकारक
- बिना रसायन के फसल सुरक्षा

6. नीमास्त्र (Neemastra)

➤ उद्देश्य:

शुरुआती कीट नियंत्रण के लिए प्रभावी

➤ सामग्री:

- नीम की पत्तियां या फल - 5 किग्रा
- देशी गाय का मूत्र - 10 लीटर
- गोबर - 1 किग्रा
- पानी - 10 लीटर

➤ बनाने की विधि:

1. नीम के पत्तों को पीसकर मूत्र व पानी में डालें।
2. 24-48 घंटे ढककर रखें, दिन में 1 बार हिलाएं।
3. छान लें, स्प्रे के लिए तैयार।

➤ उपयोग:

- 200 ml/15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

➤ फायदे:

- सस्ते में प्रभावशाली कीटनाशक
- बार-बार प्रयोग से कीट संख्या नियंत्रित रहती है

7. दशपर्णी अर्क (Dashparni Ark)

➤ उद्देश्य:

बहुउद्देशीय कीटनाशक, फफूंदनाशक और पत्तों की शक्ति बढ़ाने वाला

➤ सामग्री:

- नीम, करंज, तुलसी, अरंडी, अमरबेल, पपीता, नारियल, अमलतास, धतूरा, गुड़ - सभी पत्तियां 2-2 किग्रा
- देशी गाय का मूत्र - 5 लीटर
- पानी - 20 लीटर
- गुड़ - 500 ग्राम

➤ बनाने की विधि:

1. सभी पत्तों को बारीक काटें और मूत्र-पानी में डालें।
2. ढक्कन हल्का खोलकर 15 दिन सड़ाएं।
3. रोज एक बार चलाएं।
4. 15 दिन बाद छानकर स्टोर करें।

➤ उपयोग:

- 300 ml/15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

➤ फायदे:

- सभी प्रकार के कीटों पर असर
- पौधे हरे, स्वस्थ और रोगमुक्त रहते हैं

समग्र लाभ (All-Round Benefits):

- रासायनिक खाद और कीटनाशक की जरूरत खत्म
- मिट्टी की उर्वरता और जीवंतता में वृद्धि
- उत्पादन लागत घटेगी, लाभ बढ़ेगा
- रोगमुक्त, स्वादिष्ट और पोषक फसल
- मानव और पर्यावरण को सुरक्षित रखता है

International Year of Cooperatives

प्राकृतिक खेती - सीजन-वार कैलेंडर (घनजीवामृत, जीवामृत, बीजामृत, कीट नियंत्रण)

गेहूं (Wheat)

चरण	जैविक उपाय	मात्रा / विधि	उद्देश्य
बुआई से पहले	**बीजामृत**	बीज को 30 मिनट डुबोएं, छांव में सुखाकर बोएं	बीजजन्य रोगों से सुरक्षा
बुआई के समय	**घनजीवामृत**	5-10 किग्रा/एकड़ जड़ क्षेत्र में डालें	मिट्टी में सूक्ष्मजीव बढ़ाना
हर 15 दिन पर	**जीवामृत**	200 लीटर/एकड़ सिंचाई या छिड़काव	मिट्टी और पौधों में जैविक क्रियाएं
30 दिन बाद	**घनजीवामृत**	5 किग्रा/एकड़ जड़ों के पास	फसल की जड़ों को शक्ति
45 दिन बाद	**नीमास्त्र / ब्रह्मास्त्र**	200 ml / 15 लीटर स्प्रे	रसचूसक कीट नियंत्रण
75-80 दिन बाद	**दशपर्णी अर्क**	300 ml / 15 लीटर	फूल व दाना बनने से पहले टॉनिक

धान (Rice)

चरण	जैविक उपाय	मात्रा / विधि	उद्देश्य
बीज उपचार	**बीजामृत**	30 मिनट डुबोएं, सुखाएं	अंकुरण वृद्धि और रोगमुक्ति
रोपाई के 2 दिन पहले	**घनजीवामृत**	5 किग्रा/एकड़ खेत में मिला दें	मिट्टी की उर्वरता
हर 15 दिन	**जीवामृत**	200 लीटर सिंचाई या फोलियार स्प्रे	फसल वृद्धि में तेजी
30-35 दिन	**अग्निअस्त्र**	200 ml / 15 लीटर	कीट नियंत्रण
60 दिन	**दशपर्णी अर्क**	300 ml / 15 लीटर	सभी प्रकार के कीट व रोगों के लिए
90 दिन	**घनजीवामृत**	5 किग्रा जड़ों में	दाना बनने से पहले पोषण

International Year of Cooperatives 2025

Ministry of Cooperation | सहकारिता मंत्रालय
Government of India | भारत सरकार

गन्ना (Sugarcane)

चरण	जैविक उपाय	मात्रा / विधि	उद्देश्य
सेट उपचार	बीजामृत	सेट को 30 मिनट डुबोएं	फफूंद और रोग नियंत्रण
रोपण के समय	घनजीवामृत	10 किग्रा/एकड़ लाइन में डालें	शुरुआती जड़ वृद्धि
हर 20 दिन	जीवामृत	200 लीटर सिंचाई	मिट्टी सक्रियता और पोषण
60 दिन	नीमास्त्र / ब्रह्मास्त्र	200 ml / 15 लीटर स्प्रे	कीट नियंत्रण
90-100 दिन	दशपर्णी अर्क	300 ml / 15 लीटर स्प्रे	टॉनिक के रूप में
120-130 दिन	घनजीवामृत	10 किग्रा/एकड़	गांठ मजबूत, रस बढ़े

आरंभशील किसान उत्पादक संगठन सहकारी समिति लि.

खसरा नं.–832, ग्राम भदस्याना, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ –245208 (उ0 प्र0)

भारत में प्राकृतिक खेती (Natural Farming) को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें, किसान संगठन, और कई व्यक्तिगत प्रयास चल रहे हैं। प्राकृतिक खेती एक ऐसा कृषि पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता, बल्कि पारंपरिक और जैविक तरीकों से मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते हुए फसलों की खेती की जाती है।

भारत सरकार द्वारा प्राकतिक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देश भर में प्राकृतिक खेती के कलस्टर बनाए जा रहे हैं और उसके अंतर्गत जैव इनपुट रिसोर्स सेंटर (BRC) बनाए जा रहे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को जीवामृत, घन जीवामृत, नीम अस्त्र, अग्नि अस्त्र, आदि की उपलब्धता कराना है।

आरंभशील किसान उत्पादक संगठन हापुड़ को भी कृषि विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा हापुड़ में बने प्राकृतिक खेती के कलस्टर को प्राकृतिक खेती में सहायक जैव इनपुट उपलब्ध कराने के लिए (BRC) नियुक्त किया गया है।

हमारा उद्देश्य है की हम हापुड़ जिले में रसायनिक खेती के किसानों को प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर करें और हमारे हापुड़ जिले को पूरे देश में प्राकृतिक खेती का एक आदर्श जिला बनाएं।

हर्षवर्धन त्यागी
अध्यक्ष
आरंभशील किसान उत्पादक संगठन
सहकारी समिति लि. हापुड़ (उ. प्र.)

आरंभशील किसान उत्पादक संगठन सहकारी समिति लि.

उ0 प्र0 सहकारी समिति लि0

पंजी0 सं0 :–138

ग्राम-भदस्याना, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ0 प्र0)

आरंभशील किसान उत्पादक संगठन सहकारी समिति लि. हापुड़

खसरा नं.–832, ग्राम भदस्याना, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ –245208 (उ0 प्र 0)